आधुनिक भारताच्या जडणघडणीत
समाज सुधारकांचे योगदान

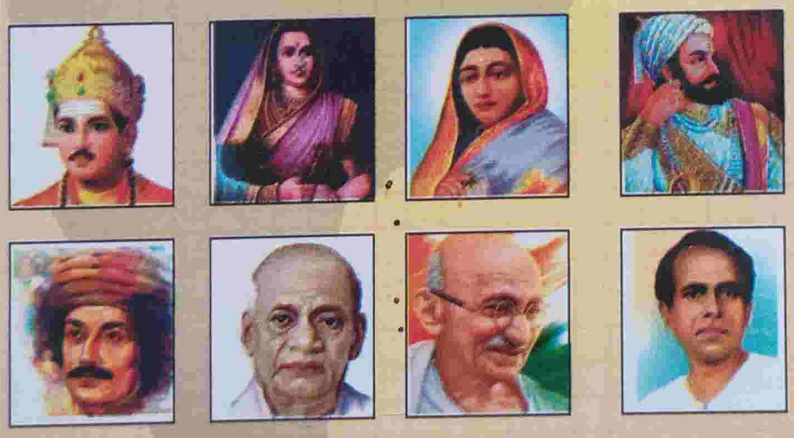

डॉ. विलास आबा गायकवाड
(संपादक)

दयाधन पब्लिशर्स ग्रुप,
भारत सरकारच्या MSME मंत्रालया अंतर्गत मान्यताप्राप्त.
नोंदणी क्रमांक MH-12-0001884

आधुनिक भारताच्या जडणघडणीत समाज सुधारकांचे योगदान

© डॉ. विलास आबा गायकवाड

आवृत्ती :- पहिली

प्रकाशिका

सौ. मस्के अनिता दयाराम

दयाधन पब्लिशर्स ग्रुप, 263, 'अनुदया', अकोला रोड, ग्रामपंचायत कार्यालयाजवळ, बळसोंड, हिंगोली. महाराष्ट्र राज्य, (भारत) 431513.

Mob. No. 7276193979 / 9604872233

Email Id: - dayadhanpublishersgroup@gmail.com

Website: - http://www.dayadhanpublication.com

मुद्रक

श्रेया प्रिंटर्स, 263, 'अनुदया', अकोला रोड, ग्रामपंचायत कार्यालयाजवळ, बळसोंड, हिंगोली. महाराष्ट्र राज्य, (भारत) 431513.

प्रकाशन दिनांक 17/09/2021

ISBN 978-93-91097-09-7

किंमत 340/-

टीप:-

प्रस्तुत ग्रंथातील लेखन व पुनर्मुद्रण यांचे सर्व हक्क **सौ. आनिता दयाराम मस्के** यांच्याकडे राखीव आहेत. लेखन संभ्रमित अथवा सदोष झाल्यास आढळल्यास यासाठी केवळ लेखकच जबाबदार असतील. ग्रंथातील भाषा, लेखन आणि आशय याविषयी प्रकाशिका किंवा मुद्रक सहमत असतीलच असे नाही.

न्यायाधिकरण:- जिल्हा व सत्र न्यायालय, हिंगोली.

अनुक्रमणिका

अ. क्रं.	शीर्षक	लेखक	पृष्ठ क्रं.
१	समाज परिवर्तनात सावित्रीबाई चे योगदान व साहित्य	प्रा. डॉ. मीना भगवानराव बोर्डे	१-५
२	गोर बंजारा समाज: विशेष संदर्भ श्री सद्गुरु संत सेवालाल महाराज	डॉ. बंजारा दिलीप लालू	६-९
३	आधुनिक मुंबईचे शिल्पकार नाना उर्फ जगन्नाथ शंकर शेठ	प्रा. डॉ. सुनील दत्त एस गवरे	१०-१५
४	मध्ययुगीन भारतातील समाजसुधारक "श्री महात्मा बसवेश्वर महाराज "	प्रा.डॉ.सिध्देश्वर शेटकर	१६-२१
५	गोपाळ गणेश आगरकर यांचे सामाजिक विचार	प्रा.डॉ. विकास बी. चांदजकर	२२-२६
६	महिला विकासात डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे योगदान	प्रा. डॉ. मीना भगवानराव बोर्डे	२७-३०
७	राजर्षी शाहू महाराजांचे अस्पृश्य व बहुजनांसाठीचे शैक्षणिक कार्य	सहा. प्रा. ज्ञानेश्वर सुभाष कव्हर	३१-३४
८	साहित्यरत्न अण्णाभाऊ साठे दलित साहित्य आणि कार्य	सहा. प्रा. सचिन रवींद्र इंगोले	३५-३८
९	राष्ट्रीय एकात्मतेचे शिल्पकार - सरदार वल्लभभाई पटेल	प्रा. डॉ. गौरव गोविंदराव जेवळीकर	३९-४३
१०	महात्मा गांधीचे सत्य व अहिंसा संबंधीचे विचार	डॉ. आर. जी. बोंडे	४४-४८
११	एक महान योद्धा...कुशल राजनीतिज्ञ...आणि प्रभावशाली शासक महाराणी अहिल्याबाई	प्रा. कु. पल्लवी र. देशमुख	४९-५१
१२	महामना पंडित मदन मोहन मालवीय यांचे समाज कार्यातील योगदान.	प्रा. पूजा हिरामण गांगोडे	५२-५४

१३	आधुनिक भारताच्या जडणघडणीत समाजसुधारक डॉ बाबा आढाव यांचे योगदान	डॉ प्रविण मानसिंग कांबळे	५५-५८
१४	राजर्षी शाहू महाराज यांचे शिक्षण विषयक विचार आणि आजची परिस्थिती	प्रा. डॉ. बन वशिष्ठ गणपतराव	५९-६६
१५	भारतीय समाजशास्त्रज्ञ डॉ. गोविंद सदाशिव धुर्ये यांचे जातीव्यवस्थेसंबंधीचे विचार	प्रा. राजेश नारायण इंगोले	६७-७३
१६	पुरोगामी महाराष्ट्राचे शिल्पकार - लोकहितवादी	डॉ. नवनाथ रासकर	७४-७७
१७	राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज: एक समाजसुधारक	प्रा. रजनी आनंदराव काळे	७८-८३
१८	ईश्वरचंद्र विद्यासागर : समाजसुधारणेचा महामेरु	डॉ. आश्लेषा मुंगी	८४-८७
१९	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर आणि महिला सशक्तिकरण	डॉ. शिंदे सुरेखा सदाशिवराव	८८-९३
२०	यशवंतराव चव्हाण यांचे कृषिक्षेत्रातील योगदान	डॉ प्रवीण भास्करराव हाडे	९४-१००
२१	डॉ. पंजाबराव देशमुख यांचे कृषी विषयक विचार	प्रा. सुधीर ना. देशमुख	१०१-१०५
२२	कौटिल्याचे अर्थशास्त्र	डॉ. जयश्री दिघे	१०६-१०९
२३	गांधीजींचे विचार आणि भारतीय संविधान	डॉ. अतुल पूंजाजी राऊत	११०-११४
२४	कौटिल्याच्या भ्रष्टाचारासंबंधी विचारांची प्रासंगिकता	डॉ.संजय भालेराव	११५-११९
२५	आधुनिक भारताच्या जडणघडणीत डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांची भूमिका	प्रा. डॉ. दिलीप नि. लांजेवार	१२०-१२५
२६	राष्ट्रमाता जिजाऊ यांचे जीवन व कार्य	प्रा. डॉ. सुनिता तुकाराम राठोड (गोरे)	१२६-१३१
२७	महात्मा गांधी: सत्याग्रह चळवळ आणि स्वातंत्र्य एक दृष्टिक्षेप	डॉ. प्रा. कारभारी लक्ष्मण भानुसे	१३२-१३६
२८	राजर्षी शाहू महाराजांचे शैक्षणिक कार्य	डॉ. मनोज उत्तमराव पाटील	१३७-१४२

२९	अण्णाभाऊ साठे एक प्रशासकीय विचारवंत	डॉ. दयाराम द. मस्के	१४३-१४९
३०	पंजाबराव देशमुख यांचे सामाजिक कार्य	डॉ. आर. व्ही. मोरे	१५०-१५३
३१	महात्मा फुले यांचे स्त्री उद्धाराचे कार्य	डॉ. बावलगावे सी. एम.	१५४-१५९
३२	महात्मा ज्योतिबा फुलेः विचार आणि कार्य	प्रा. डॉ. डी. के. खोकले	१६०-१६६
३३	अण्णा भाऊ साठे: समता, स्वातंत्र्य आणि बंधुत्वाचे पाईक	प्रा. डॉ. भालेराव सुधाकर नारायण	१६७-१७१
३४	शिवकालीन प्रशासन	प्रा. डॉ. बिडवे टी .एस	१७२-१७८
३५	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर आणि कामगार हितांचे रक्षण	प्रा. उद्धव शिवाजी जमधाडे	१७९-१८१
३६	राजर्षी शाहू छत्रपती यांचे शैक्षणिक विचार	डॉ. बाळासाहेब मुळिक	१८२-१८७
३७	आधुनिक भारताच्या जडणघडणीत, अस्पृश्यता निवारण आणि स्त्री-शिक्षणाकरिता महात्मा फुले यांचे योगदान	सहा. प्रा. यु. एस. बनकर	१८८-१९१
३८	राजश्री शाहू महाराजांचे स्त्रियांविषयीचे कार्य	डॉ.देवानंद सखाराम अंभोरे	१९२-१९९
३९	महात्मा फुले यांचे सामाजिक व शैक्षणिक विचार	प्रा. डॉ. केशव सिताराम गोरे	२००-२०८
४०	राजा राममोहन राय यांचे स्वातंत्र्य विषयक विचार	प्रा. दत्तात्रय मुकुंदराव ढवारे	२०९-२१२
४१	महात्मा ज्योतीराव फुले यांचे राजकीय विचार	प्रा. एस. एस. तायडे	२१३-२१७
४२	सार्वजनिक सत्यधर्म पुस्तक -एक विज्ञानवादी जीवनमार्ग....	प्रो. भगवान वाघमारे	२१८-२२५
४३	छत्रपती शिवाजी महाराजांचे शिवचरित्र व राष्ट्रीय एकात्मता	प्रा. माणिक डोखळे	२२६-२३०
४४	गो. ग. आगरकरांचे आधुनिक भारताच्या जडणघडणीत योगदान	डॉ. विष्णू नामदेव लांडे	२३१-२३६

४५	महात्मा जोतीराव फुलेचे शिक्षणाबाबतचे विचार : एक आढावा	प्रा. सुभाष पवार	२३७-२४०
४६	दयानन्द सरस्वती - आर्य समाज के संस्थापक व समाज-सुधारक	गणेश कुमार सोपानराव पेठकर	२४१-२५०
४७	महात्मा गांधी के विचारों की वर्तमान युग में प्रासंगिकता	डॉ. दीपक राघोजी दामोदर	२५१-२५६
४८	कौटिल्य के राज्य संबंधी विचार	डॉ. अतुल नारायण खोटे	२५७-२६०
४९	महात्मा बसवेश्वर के वचन साहित्य में स्त्री दर्शन	सहा. प्रा. शिवकुमार उस्तुर्गे	२६१-२६२
५०	डॉ. अंबेडकर और सामाजिक न्याय	प्रा. डा. बंडू एस. मानवटकर	२६३-२६५
५१	Dr. B. R. Ambedkar: Women Empowerment in India	Chaitanya Ajabrao Ghuge and Unmesh Ajabrao Ghuge	२६६-२६९
५२	Raja Ram Mohan Roy - The Indian Renaissance	K.M. Ranjalkar	२७०-२७२
५३	Manohar Malgaonkar's depiction in Indo-Anglican Fiction	Dr.Prachi Sharad Patharkar,	२७३-२७६
५४	Father of the Nation Mahatma Phule and Dr. Babasaheb Ambedkar Struggle and Coordination	Mr. Amardeep R. Jadhao, Dr. Pramod S. Phatak	२७७-२८१
५५	Biography of Punyaslok Rajmata Ahilyadevi	Kiran F. Shelke and Adinath D. Badar	२८२-२८७
५६	Maharaja Sayajirao Gaikwad: The forerunner of Grand Literary Movement.	Prof. Dr Balvant Patil	२८८-२९५

४७. महात्मा गांधी के विचारों की वर्तमान युग में प्रासंगिकता

डॉ. दीपक राघोजी दामोदर
समाजशास्त्र विभाग प्रमुख
मातोश्री शांताबाई गोटे महाविद्यालय, वाशिम.

महात्मा गांधी जिन्हें हम प्यार से बापू कहते हैं, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के सबसे प्रमुख नेताओं में से एक हैं। सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चलते हुए देश को २०० वर्षों की पराधीनता के बाद जिन्होने आजादी दिलायी। जिसके कारण आज हम उन्हे राष्ट्रपिता के नाम से संबोधित करते है। महात्मा गांधी केवल एक देश या समुदाय के ही नहीं बल्कि संपूर्ण मानवजाति के प्रेरणा स्रोत हैं। उन्होने कभी भी अपने सिद्धांतों से समझौता नहीं किया। वे केवल एक नेता ही नहीं बल्कि एक निष्काम कर्मयोगी, तथा सच्चे अर्थों में युगपुरुष थे। आज ७० साल बाद भी महात्मा गांधी के सभी पहेलु के संदर्भ के विचार प्रासंगिक तथा उपयुक्त है। इस कारण विश्वविद्यालय तथा महाविद्यालयो में महात्मा गांधी के विचारो का अध्ययन तथा अध्यापन किया जाता है। प्रस्तुत शोध निबंध में महात्मा गांधी के विभीन्न पहेलु के संदर्भ के विचारो की प्रासंगिकता तथा उपयुक्ता का विश्लेषण आया है।

१महात्मा गांधी के षिक्षा संबंधी विचार :–

मानव का सर्वांगिण विकास केवल और केवल शिक्षा से ही संभव है। महात्मा गांधी की इस मुख्य धारा आज भी समाज विकास का मुख्य सुत्र है। महात्मा गांधी के शिक्षा संबंधी विचारधारा नैतिकता एवं स्वावलंबन संबंधी सिध्दांत पर आधारीत है। शिक्षा के साथ नैतिकता तथा स्वावलंबन ना होणे पर शिक्षा का दुरूपयोग हो सकता है। ऐसा उनका मानना था। आज हम देखते है की भारतीय शिक्षा व्यवस्था मुल्यनिष्ठा तथा नैतिकता पर अधारीत है। इसी कारण आधुनिक भारत के निर्माण में महात्मा गांधी का बहुआयामी योगदान रहा है। गांधीजी ज्ञान आधारीत शिक्षा के स्थान पर आचरण आधारीत शिक्षा के समर्थक थें। उनके अनुसार शिक्षा प्रणाली ऐसी हो जो व्यक्ती को अच्छे–बुरे का ज्ञान प्रदान करे उसे नैतिक बनने के लिए प्रेरीत करें। महात्मा गांधी शिक्षा को मानव के सर्वांगिण विकास का सक्त माध्यम मानते थे। तथा मातृभाशा में शिक्षा पर महात्मा गांधी ने जोर दिया है।

वर्तमान भारतीय समाज में कई सामाजिक समस्याऐं दिखाई देती है। इन में से कई समस्याओ का मुख्य कारण मानव का बडी मात्रा में हो रहा नैतिक अधपतन है। व्यक्ती में स्वार्थवादी प्रवृत्ती तथा अनैतिकता दिनबदिन बढ रही है। ऐसे में शिक्षा व्दारा नैतिकता को बढावा देकर इन सामाजिक समस्याओ का समाधान पाया जा सकता है। इसी कारण आज भी महात्मा गांधी के शिक्षा संबंधी विचार प्रासंगिक तथा उपयुक्त है। महात्मा गांधी ने शिक्षा

को हस्तकला, व्यावसायिक कार्यकुशलता के साथ जोडणे से बेरोजगारी तथा गरीबी को हम कम कर सकते है ऐसा भी कहा है।

महात्मा गांधी यह मुख्य रूप से मानना था की शोषण विहीन समाज और स्वस्थ समाज का निर्माण शिक्षा के अभाव में असंभव है। भ्रष्टाचार बेरोजगारी, अपराध, महिलाओ की समस्यसाऐं, आत्महत्या, पारीवारिक समस्या इन सभी समस्याओ का हल हमे महात्मा गांधी शिक्षा संबंधी विचारोमें दिखाई देता है। इस कारण भारत जैसे विकसनशिल राष्ट्र के लिए महात्मा गांधी के शिक्षा संबंधी विचार प्रासंगिक तथा उपयुक्त है।

महात्मा गांधी के स्वच्छता संबंधी विचार :–

महात्मा गांधी ने अपणे जीवन में कई बातो को अहम स्थान दिया है। उन में से एक स्वछता है। महात्मा गांधी के स्वच्छता संबंधी विचार भी बहोत अहम और महत्वपूर्ण है। महात्मा गांधी के स्वच्छता संबंधी विचारो के अपणाकर हम हमारे देश को स्वच्छ, स्वस्थ और विकसीत बना सकते है। विश्व के सभी विकसीत देशो में एक बात सामान्य रूप से पायी जाती है। वह है स्वच्छता। स्वच्छता के अलावा विकास की कल्पना करणा असंभव है। यह महात्मा गांधी की यह मुख्य विचारधारा है।

उन्होने स्वच्छता को इतना महत्व दिया है की वह कहते है की, राजनैतिक आजादी से स्वच्छता जरूरी है। उनका ऐसा हरदम मानना था की अगर कोई समाज आजाद है लेकीन अस्वच्छ है तो ऐसा समाज कभी भी एक विकसीत समाज नही बन पायेंगा। इसी कारण राजनैतिक आजादी से स्वच्छता जरूरी है। अगर कोई स्वस्थ है तो इसका मतलब है की वह पहले स्वच्छ है। ऐसा व्यक्ती तंदुरूस्त होता है। जीस के कारण वह अपणी पुर्ण क्षमता से कार्य करता है। जीसका सिधा संबंध आर्थिक प्रगती से है। इसका अर्थ यह है की जहॉ पर स्वछता है वहॉ पर समृध्दता है। महात्मा गांधी कहते थे की, स्वच्छता हमने आचरण में इस तरह से आपणानी चाहीऐ की वह हमारी आदत बन जाये। इसी कारण गांधीजी कहा करते थें की, हमारे अंदर एक ही ऐसी चीज है। जो हमे पढाई जानी चाहिए और वह है स्वच्छता।

भारत यह गावो का देश है ऐसा महात्मा गांधी कहते थे। इसलिए देश अगर स्वच्छ बनाना है तो गांवो को स्वच्छ बनाना पडेगा। बेहतर साफ–सफाई और स्वच्छता से हम भारतीय गांवो को आदर्श बना सकते है। जीसमें उन्होने हर घर शौचालय होणा जरूरी समजा है। तथा नदीयो की साफ–सफाई पर भी उन्होने जोर दिया है।

बाहय स्वच्छता के साथ महात्मा गांधीने हरदम आंतरीक स्वच्छता पर भी जोर दिया है। तन और मन की स्वच्छता से ही परीपूर्ण व्यक्तीत्व उभरकर आता है। तन और मन साफ हो तो धन खुदबखुद नजदिक आता है। महात्मा गांधी कहते थे हमारा शारीरिक स्वास्थ जीतना अहम है, उतना ही मानसिक रूप से स्वस्थ रहना जरूरी है। तो कोई भी समस्या का तनाव आप पर प्रभावी

नही होगा। आज के वर्तमान समय में भारतीय समाज में पायी जानीवाली कई समस्याओ का हल हमे महात्मा गांधी स्वच्छता संबंधी विचारोमें दिखाई देता है। इसी कारण महात्मा गांधी के स्वच्छता संबंधी विचार प्रासंगिक तथा उपयुक्त है।

२महात्मा गांधी के आर्थिक विचार :—

महात्मा गांधी ऐसा मानते थे की हमारी आवश्यकताऐ गुणाकार पध्दती से बढती है। जो दिनबदिन बढतीही जाती है। जीनका अंत नही होता। नाही उसकी पूर्तता से हमे की समाधान प्राप्त होगा। इस सभी आवश्यकताओ को पुरा करणे के लिए हम जीन साधनो को उपयोग में लाते है वह भी दिनबदिन कम होते जा रहे है। एक समय था हमारा समाज एक सुसंस्कृत समाज था। लेकीन हमारा आज अधपतन हो रहा है। इसीलिए आज भी महात्मा गांधी के आर्थिक विचारों को हमे अपनाने की जरूरत है।

लेकीन तंत्रज्ञान का अति और गैरवापर जो हो रहा है मै उसके खिलाफ हूं। उनका कहना था की, सभी साधन का उपयोग समाज को होणा चाहिए। बाद में खुदबखुद व्यक्तीगत स्तर पर यह सभी साधन पोहच जायेंगे। गांधीजी ऐसा मानते थे की, जो खेती के फसल के कार्य के पश्चात जो ग्रामवासी खाली बैठे है, वह कुछ उद्योग लगाऐ। जीससे बेरोजगारी की समस्या छुटेगी और मनुष्यबल व्यर्थ नही जायेंगा। बॅक सिस्टीम के संदर्भ में उनका मानना था की लोन सिस्टीम से गरीबो का पैसा धिरे—धिरे अमिरो के पास चला जाता है। वह लोन संदर्भ में ऐसा कहते है की, मुझे तिन दिन तक भूका रहना पडे और लोन ना लेना पडे तो अच्छी बात है। इस कारण महात्मा गांधी कर्जव्यवस्था को विरोध करते थे।

३महात्मा गांधी के साहित्य संबंधी विचार :—

सत्य का प्रतिनिधीत्व करणा यही सहित्य का प्रथम कर्तव्य हैं। और उनकी स्वदेशी का मतलब आर्थिक, राजकीय दृष्टीकोन से नही बल्की ''मै कौन हूं'' इस पहचान है। काव्य और साहित्य का जो उद्देश है वही उसका धर्म है। ऐसा गांधीजी मानते थे। साहित्य, कला में संवेदना की अभाव से मणुष्य पशु समान हो जाता है। साहित्य में अगर संवेदना हो तो साहित्य हमें जीवन का सत्य बताता है। जीवन की समस्याओ से हमे उजागर करता है। जब संवेदना की बात आती है तो हम सब जानते है की, महात्मा गांधी ने राजकीय संवेदना को नैतिक संवेदना से जोडा था। साहित्य संदर्भ में उनका ऐसा मानना था की वही सही मायने में साहित्यकार है जो लिखता वही है जो उसका व्यवहार हो। इसी कारण किसी प्रकार के साहित्य का संवेदनापूर्ण होणा बहोत ही आवश्यक है। इस कारण महात्मा गांधी मानते थे की, सत्य का प्रतिनिधीत्व करणा यही सहित्य का प्रथम कर्तव्य हैं। सत्यम् शिवम् सुंदरम्।

४महात्मा गांधी के स्वेदशी संबंधी विचार :—

स्वदेशी का मतलब आर्थिक, राजकीय दृष्टीकोन से नही बल्की "मै कौन हूं" इस पहचान है। ऐसा महात्मा गांधी मानते थे। मेरी धार्मिक परंपराऐ क्या है? क्या मै उन परंपराओ के अनुसार व्यवहार करता हूं। अगर हमारा व्यवहार उन परंपराओ के अनुसार हो रहा है तो हमारा व्यवहार स्वेदशी है। इसप्रकार महात्मा गांधी ने धार्मिक आचार विचारो का संबंध स्वदेशी जोडा है। हम अगर स्वदेशी को अपणाते है तो हमारी प्राचीन संस्कृती बनी रहेंगी। ऐसा उनका मानना था। स्वदेशी के स्विकार से ही हमारे मणुष्यबल का सही मायने में उपयोग होगा। जीससे हमारा स्वावंलबन बढेगां। मानव को विस्थापीत करणेवाले विज्ञान को महात्मा गांधी नही मानते थे। स्वावलंबी भारत बनना उनका सपना था। वे मानते थे की हमारा स्वावलंबन टुटा तो हम गुलाम बन जायेगें। राष्ट्र विकास हेतू उन्होने १८ रचनात्मक कार्यक्रम बनाये थे।

हिंदस्वराज में स्वदेश, स्वराज, सत्याग्रह और सर्वोदय महात्मा गांधी की इन संकल्पना आजके आत्मनिर्भर भारत अत्यंत उपयुक्त है।

५महात्मा गांधी के धार्मिक विचार :—

महात्मा गांधी के जीवनपर हिंदु धर्म तथा गिता का प्रभाव था। हिंदु धर्म का सार सत्य, स्वदेश, स्वराज, सत्याग्रह तथा सर्वोदय यह सिध्दांत आज भी हमारे जीवन के आधार है। ऐसा महात्मा गांधी मानते थे। अहिंसक उपायो से सत्य की खोज करणा ही हिंदु धर्म है। इसीकारण सत्य और अहिंसा ही हिंदु धर्म का सार है। सदैव हमारा अध्ययन विषय सत्य होणा चाहिए। और सत्य का ही हमने प्रसार और प्रचार करणा चाहिए। महात्मा गांधी के विभीन्न लेखो का यह विश्लेषण आया है की, एक अध्यापक और एक हिंदु व्यक्ती की साम्यता का विश्लेषण किया है। उन्होने कहा की, अध्यापक और एक हिंदु व्यक्ती सत्य की साधना करते है। दोनो सत्य के लिए लढते है, सत्य ही सिखाते है। इस कारण दोनो में कई संदर्भ में समानता है। गिता और हिंदु धर्म परंपरा से गांधाजी इतने प्रभावीत थे की, उनका ऐसा मानना था की, जो कल्पनाये महाभारत से विसंगत है वह गलत है। जो कल्पनाये हिंदुवाद से विपरीत है वह सार हिन है। हिंदुवाद की सुंदरता का कारण है की, इसमें सभी का समागम है। महात्मा गांधी ऐसा मानते थे की, हिंदु धर्म को परखने के बाद मैने जाना की, अन्य धर्मो की तुलना में यह धर्म सहनशिल है। यह मेरी व्यक्तीगत स्वतंत्रता को प्राधान्य देता है। यह धर्म संकुचीत नही इस कारण यह अन्य धर्मो को भी आदर करता है। यंग इंडीया के उनके एक लेख में गांधीजी ऐसा कहते है की, मै एक सनातनी हिंदु हूं। अगर मै नितीपूर्ण व्यवहार करता हूं तो ही मै हिंदु हूं। धर्म के नाम पर जो लोग अनिती करते है। मै उनके खिलाफ हूं। वेद, उपनिषेध पुराणो प्रती मेरे मन में आस्था है। वर्णाश्रम में मेरा विश्वास है। उनके मौलिक स्वरूप को मै मानता हूं। मै गोरक्षा में विश्वास रखता हूं। महात्मा गांधी का हिंदुवाद इसप्रकार दिखाई देता है। भगवत गिता के संदर्भ में महात्मा गांधी ऐसा मानते थे की, गीता केवल कोई धर्मविशेष

के लिए नही बल्की संपर्ण मानव जाती के लिए है। इस कारण गीता किसी भी धर्मशास्त्र का सार है।

गीता हरदम यह कहा गया है की सदैव हमने अपणी अंतरआत्मा की आवाज सुननी चाहिए। गीता के अनुसार हमारी अंतरआत्मा ही हमे क्या सही क्या गलत इसमें का अंतर समजाती है। इसी कारण महात्मा गांधी सदैव अपणी अंतरआत्मा की सुनते थे। हमारे अंदर एक दुर्योधन बैठा है इसका मतलब अहंकार है। अहंकार से हमने सदैव बचना चाहिए। क्योंकी अहंकार हमे खत्म करता है। गीता को अपणासे अहंकार इस मानवी प्रवृत्ती से कैसे बचा जा सकता है इसका विश्लेषण म.गांधी के विचारोमें गीता के संदर्भ में पाया जाता है। जब हमारी कामनाओ की पूर्ती नही होती तब हमे क्रोध आता है। जीसके कारण हमारे विवेक पर परदा आता है। अंत में बुध्दीनाश के कारण हमारा विनाश होता है। गीता में इन मनोभावो का विश्लेषण किया गया है। इस परीस्थिती से दुर करणे के लिए हमने साधना और आत्मचिंतन करणा जरूरी है। जो महात्मा गांधी अपणे जीवन में करते थे। जीसका स्वीकार उन्होने गिता से किया था। महात्मा गांधी कहते है की गीता एक अहिंसा मार्ग है। भलेही महाभारत जैसा महायुध्द हो गया हो। आत्मरक्षा में अगर हिंसा हो जाये तो उसे हिंसा नही कहते। महात्मा गांधी कहते थें की, महाभारत के युध्द परीणाम अहंकार का पराभव है। इसीकारण गीता का अनासक्त योग अहिंसा की शिक्षा देता है। महात्मा गांधी सत्य के प्रती जो अनासक्त थे। वह गीता का ही प्रभाव है। सत्य ही ईश्वर है और इसे प्राप्त करणे के कई साधन है। ऐसे गांधीजी मानते थे। महात्मा गांधी की रामराज्य की संकल्पना भी गीता से ही आती है। महात्मा गांधी ने जो स्वदेशी नारा लगाया था वह भी उन्हेने गितासे लीया है। गीता के स्वधर्म अर्थ उन्होने स्वदेशी से लिया था। विदेशी चिजो का उपयोग नुकसानदायक है। इसीकारण हमारे सामाजिक ,आर्थिक जीवन से स्वधर्म तथा स्वदेश हमेशा जुडा रहना चाहिए। **महात्मा गांधी की ग्रामस्वराज्य की संकल्पना :—**

महात्मा गांधी के ग्रामस्वराज्य की संकल्पना को 'आदर्श राज्य' तथा 'रामराज्य' ऐसा भी कहा जाता है। भारत की आत्मा गाव में बसी है ऐसा गांधीजी मानते थे इसलीए उनकी ग्रामस्वराज की संकल्पना पुरी तरह से ग्राम केंद्रीत है। गांधींजी को अपेक्षित आदर्श राज्य की कल्पना को राज्य कहना उचीत नही क्यो की उन्हे आपणे आदर्श राज्य में राजकीय सत्ता अपेक्षीत न थी। उनकी कल्पनामें का समाज यह अहिंसक होगा और दिनबदिन यह अहिंसा बढती जायेगी। परिणाम स्वरूप समाज स्वयंशासीत होगा। इस कारण राजकीय सत्ता की आवश्यकता नही होंगी। उनका आदर्श राज्य ग्रामराज्य का संघराज्य होंगा। गांधींजी को अपेक्षीत इस प्रकार के आदर्श राज्याची की कुछ महत्त्वपूर्ण महत्वपूर्ण विशेषताऐं निम्नलिखीत तरह है। १. खेडों की स्वयंपूर्णता २. प्रजा और लोकमत का महत्व ३. सत्ता का विकेंद्रीकरण ४. श्रमप्रतिष्ठा ५. पात्र

उमेदवार का चुनाव ६. आदर्श राज्याची कार्ये इन विशेषताओसे महात्मा गांधी का आदर्श समाज परीपूर्ण होंगा।

महात्मा गांधी की ग्राम स्वराज्याची कल्पना विकेंद्रीकरण, व्यक्तीस्वातंत्र, श्रमप्रतिष्ठा, अहिंसा, नैतिकता, सहकार, स्वयंपूर्णत: स्वयंशासन, इन जैसे मानवतावादी तत्वोपर आधारीत है। जो समाज वर्गविहीन तथा शोषणविरहीत होंगा।

निष्कर्ष :—

१ शिक्षा व्दारा नैतिकता को बढावा देकर इन सामाजिक समस्याओ का समाधान पाया जा सकता है। इसी कारण आज भी महात्मा गांधी के शिक्षा संबंधी विचार प्रासंगिक तथा उपयुक्त है।

२ बाहय स्वच्छता के साथ महात्मा गांधीने हरदम आंतरीक स्वच्छता पर भी जोर दिया है। हमारा तन और मन स्वच्छ हो तो धन खुदबखुद आ जायेगा यह महात्मा गांधी के विचार समग्र मानव जाती के विकास केंद्र है।

३ महात्मा गांधी के आर्थिक विचारों को अपणाकर बेराजगारी इस समस्या को छुटकारा पाया जा सकता है।

४ महात्मा गांधी ने धार्मिक आचार विचारो का संबंध स्वेदशी जोडा है। हम अगर स्वदेशी को अपणाते है तो हमारी प्राचीन संस्कृती बनी रहेंगी।

५ कृषी व्यवसाय को अन्य व्यवसाय की जोड होणा जरूरी है। यह गांधींजी के ग्रामस्वराज्य के संदर्भ के विचार किसानो की आत्महत्याओ को रोक लगा सकते है।

६ गरीबी और बेकारी यह वर्तमान गावो की मुख्य सामाजिक समस्याऐं है। जीसके चलते ग्रामीण जीवन में निराशा आ गई है। यह निराशा गॅवाकर ग्रामीण जीवन चैतन्यपूर्ण तथा स्वयंपूर्ण बनाने के लिए गांधी के विचार आज भी उपयुक्त ळें

संदर्भ:—

१. प्रा.डॉ.व.गो.नांदेडकर : राजकीय विचार आणि विचारवंत, डायमंड पब्लीकेशन, पुणे, २०११

२. डॉ.अरविंद श्रृंगारपुरे: समग्र भारतीय व पाश्चात्य राजकीय विचारवंत, विद्या प्रकाशन, नागपूर,२०१४

३. प्रा.राम मुठाळ : राजकीय सिध्दांत आणि राजकीय विचार, अंकुश प्रकाशन, नागपूर, १९९९

४. प.सी.काणे : राजकीय सिध्दांत आणि राजकीय विचार, पिंपळापुरे प्रकाशन, नागपूर, २०००

५. डॉ.श्रीराम येरणकर: राजकीस सिध्दांत, साईनाथ प्रकाशन, नागपूर, २००५

६. डॉ.प्रदिप आगलावे : भारतीय व पाष्चात्य विचारवंत, साईनाथ प्रकाशन, नागपूर,

७. मोहनदान गांधी : सत्याचे प्रयोग आत्मकथा, नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद, २००८